January to March 2019
E-Journal
Issue XXV, Vol. IV

RNI No. – MPHIN/2013/60638
ISSN 2320-8767, E-ISSN 2394-3793
Impact Factor - 5.610 (2018)

Naveen Shodh Sansar

(An International Refereed/ Peer Review Research Journal)

नवीन शोध संसार

Editor - Ashish Narayan Sharma

Office Add. "Shree Shyam Bhawan", 795, Vikas Nagar Extension 14/2, NEEMUCH (M.P.) 458441, (INDIA)
Mob. 09617239102, Email : nssresearchjournal@gmail.com, Website www.nssresearchjournal.com

82. पुलिस प्रशासन और मानवाधिकार (डॉ. भंवरलाल चौधरी) 227
83. Impact of Islam on Indian Culture (Sunil Sharma) 229
84. भारत में सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन (डॉ. अंजू श्रीवास्तव) 231
85. फैजाबाद मण्डल में स्वतन्त्रता पश्चात नगरीकरण की प्रवृत्ति : एक भौगोलिक अध्ययन 234
(डॉ. बृज विलास पांडे, राज कुमार यादव)
86. पुरातात्विक व सांस्कृतिक नगरी मल्हार के प्रमुख शिलालेख एवं संग्रहालय का ऐतिहासिक अध्ययन 237
(मंजू साहू, डॉ. रामरतन साहू)
87. Some Traditional Ethnoveterinary Plants of Shekhawati Region of Rajasthan (Manju Chaudhary) 241
88. मिलावट से मानव जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है जो देश के विकास में बाधक है। 247
'इन्दौर (म.प्र.) के सन्दर्भ में' (डॉ. दीपक जैन)
89. A Study of Impact of Green Marketing on Consumers Buying Behaviour in FMCG Sector 249
in Urban Areas (Dr. Alka Awasthi, Anita Vishwakarma)
90. A Study of Partition Literature the novel of Selected writer, Attia Hosain, ... 255
Khushwant Singh, Chaman Nahal and Bapsi Sidhwa (Sumiyyah Arif, Dr. Shubra Rajput)
91. Exploring Varanasi through a Westerner's Sojourn: A Reading of *Kaleidoscope City* by 259
Piers Moore Ede (Ms. Savita Verdia)
92. अहिंसा एवं गांधी दर्शन (डॉ. सुनीता गुप्ता) 262
93. वर्तमान परिस्थितियों का आईना है व्यंग्य (डॉ. विनय शर्मा) 265
94. The Impact of Knowledge Management on Organizational Performance (Dr. Nilesh Gangwal) ... 267
95. Human Rights Jurisprudence in India (Dr. Manoj Jain) 273
96. Technical Development of Banking Sector In 21st Century (Dr. Sanjay Bhavsar) 275
97. Contribution of Internal Audit (Dr. Pratiksha Vyas) 278
98. गाँधी चिन्तन में भारतीय स्त्रियों के सामाजिक पुनरुत्थान की संकल्पना (डॉ. गोपाल सिंह) 281
99. आधुनिक हिन्दी कहानी: स्त्री और भूमंडलीकरण (डॉ. प्रभा शर्मा) 283
100. साठोत्तरी कहानियों में व्यक्त हिन्दी भाषा का सामाजिक, सांस्कृतिक सरोकार (डॉ. विजयलक्ष्मी पोद्दार) 285
101. दक्षिणी राजस्थान कृषि गहनता का वितरण (2010-11 से 2012-13) - एक भौगोलिक अध्ययन 287
(रोहित लौहार)
102. प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत् प्रशिक्षित अध्यापकों की शिक्षा अभिक्षमता (अमरोहा जनपद के 290
विशेष संदर्भ में) (डॉ. अनुराग यादव, भावना वर्मा)
103. जीवन कौशल विकसित करने में शिक्षक की भूमिका (डॉ. योगेश चन्द्र जोशी) 294
104. कक्षा-कक्ष पारिस्थितिकी (डॉ. हर्षा क्षीरसागर) 297
105. Significance of the 'Python Episode' in Arrow of God (Dr. Surendra Kumar Sao) 301
106. Feminist Voices in the Novels of Kamala Markandaya (Minakshi Kumar) 304
107. सूफीवाद - साझा संस्कृति के प्रतिबिंब (डॉ. अलीमा शहनाज सिद्दीकी) 307
108. Research in Teacher Education (Dr. Kuldeep Singh Tomar) 309
109. Food Supplement (Protein) for Boosting the Strength of Sportsperson 311
(Dr. Deepak Chandra Maurya)
110. मृच्छकटिके लोककलासामाजिकपक्षाश्च (डॉ. नरेन्द्रकुमारः) 313
111. मीडिया में वंचित समाज के पत्रकार एवं डाईवर्सिटी (महेश कुमार वर्मा, डॉ. कुंजन आचार्य) 315

पुरातात्विक व सांस्कृतिक नगरी मल्हार के प्रमुख शिलालेख एवं संग्रहालय का ऐतिहासिक अध्ययन

मंजू साहू* डॉ. रामरतन साहू**

शोध सारांश – दक्षिण कोसल की प्राचीन राजधानी का परिधान लिए ऐतिहासिक स्थल मल्हार पुरातन सामग्रियों, अभिलेखों एवं मुद्राओं से भरा हुआ है। इस भू-भाग की पाषाण कला पग-पग मुखरित है, यहां की कला, संस्कृति एवं धार्मिक सहिष्णुता दूर-दूर तक फैली हुई है। इस स्थल की धार्मिक एवं पौराणिक गाथाओं से संबंधित अनेक पाषाण प्रतिमाएं सैलानियों का मन मोह लेती है। यहां के प्राचीन मंदिर, मठ, विहार एवं गढ़ आदि की शिल्पकला हमारी प्राचीन संस्कृति की गौरवगाथा को सजीवता प्रदान कर रही है।

शब्द कुंजी– ब्राम्ही, भावाभिव्यक्ति, शिलापट्टी, कलाकृतियां, चतुर्भुजी।

प्रस्तावना – किसी भी स्थल में उत्कीर्ण लेख ही अभिलेख की श्रेणी में आता है। भाषा एवं लिपि इस लेख के प्रमुख माध्यम होते हैं। स्वाभाविक है, कि भाषा एवं लिपि में से सर्वप्रथम भाषा का ही जन्म हुआ होगा, कालांतर में लिपि का जन्म हुआ होगा। भाषा मानव के भावाभिव्यक्ति का सरल माध्यम है। इसका प्रारंभिक स्वरुप क्या था, इसका स्पष्टीकरण नहीं हो पाया है। समय के साथ-साथ भाषा का भी विकास हुआ, आगे चलकर इसे भिन्न-भिन्न नाम दिया गया, यथा – पाली, प्राकृत इत्यादि। इसी प्रकार अपने भाव-रूपी भाषा को अभिव्यक्त करने के लिए लिपि का विकास हुआ एवं उसे भिन्न-भिन्न नाम दिए यथा ब्राम्ही व खरोष्ठी इत्यादि। कालांतर में लेखन कला के साथ ही अभिलेखों का आविर्भाव हुआ। अभिलेख प्राय: पत्थरों को खोद कर एवं धातु पर उत्कीर्ण कर लिखे गये। प्राचीन भारतीय इतिहास के निर्माण में इन अभिलेखों का विशेष महत्व है। उत्कीर्ण लेख पत्थर पर उत्कीर्ण हो अथवा ताम्रपत्र, भोजपत्र आदि पर उत्कीर्ण हो, इसे संग्रह करके जिस स्थान पर रखा जाता है, उस स्थान को संग्रहालय कहा जाता है। मल्हार नगर के पुरावशेषों के महत्व को देखते हुए, केन्द्रीय शासन के पुरातत्व विभाग द्वारा इन्हें संरक्षण प्रदान करने के लिए इस नगर में एक संग्रहालय की स्थापना की है। यहां स्थित संग्रहालय के प्रागंण में बहुसंख्यक प्रतिमाएं, शिलापट्टी, द्वार स्तंभ एवं कलाकृतियां संग्रहित है। इन सभी प्रतिमाओं का उल्लेख करना संभव नहीं होगा बल्कि इसके कलात्मक एवं पुरातात्विक पहलुओं को उजागर करना युक्ति संगत होगा। इस संग्रहालय में प्राचीन काल में विभिन्न प्रतिमाएं प्रतिस्थापित है। इसी के साथ मंदिरों व महलों के भग्नावशेष भी इस स्थल में व्यापक रूप से प्राप्त हुआ है। यहां से प्राप्त प्रतिमाओं से स्पष्ट होता है कि प्राचीन समय में यहां बौद्ध एवं जैन धर्म का व्यापक प्रचार-प्रसार हुआ था।

मल्हार के समीपस्थ भू-भाग से कुछ स्वर्ण मुद्राएं 1942 ई. में चकरबेड़ा से प्राप्त हुआ है। इसमें मात्र दो मुद्राओं का प्रकाशन वर्तमान समय तक हो पाया है।[1] इस स्थल से प्राप्त मुद्राओं का संबंध रोमन राजाओं से रहा है। वर्तमान समय में ये दोनों सिक्के रायपुर के महंत घासीदास संग्रहालय में है।[2] पूर्व समय में चकरबेड़ा, बूढ़ीखार व जैतपुर का क्षेत्र मल्हार नगर के सीमा के अंतर्गत आता था। यहां से तांबे के बहुतायत सिक्के प्राप्त हुए हैं। स्कंदमाता की अलंकरण युक्त प्रतिमा विशेषतया महत्वपूर्ण है। यह प्रतिमा लगभग 150 सेंटीमीटर एक उंचे पाषाण पर अशोक वृक्ष के नीचे आकर्षक मुद्रा में खड़ी माता पार्वती, बाएं भाग में बच्चे को गोद लिए हुए प्रदर्शित किया गया है। माता का बायां हाथ बच्चे के पृष्ठ भाग से आकर उसके कटिभाग के मध्य में अवस्थित है। माता के दाएं हाथ में कमल विराजित है।जिसमें क्रमश: कमल पत्र, कली एवं पुष्प को त्रिशुलाकृति में दर्शाया गया है।[3] इनके मस्तक में केश बंध अलंकृत है। इसके साथ ही कलात्मक साड़ी का सुंदर चित्रांकन किया गया है। माता स्कंदमाता के मुख मुद्रा में मातृत्व का भाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर हो रहा है। इस प्रतिमा में मातृत्व भाव का सजीव चित्रण किया गया है।तदनुरूप बाल स्कंद की सहज शव का सुंदर अंकन है।[4] इस प्रतिमा का शारीरिक सौष्ठव, त्रिभंग मुद्रा,अलंकृत वस्त्र विन्यास एवं अन्य विविध अलंकरणों का कलात्मक समन्वय दर्शनीय है, जो सर्वथा आकर्षक के साथ ही स्वभाविक भी है। इस प्रतिमा में बालक की सौम्यता, कलाकार की विशेष कलात्मक रूचि को परिभाषित करती है।

विवेचनों के आधार पर यह प्रतिमा अद्वितीय मानी जाती है। प्रतिमा-विज्ञान की दृष्टिकोण से इस प्रतिमा का निर्माण काल छठवीं सदी के आरंभ को माना जा सकता है। उक्त प्रतिमा के विषय में विद्वानों ने अपना मत अलग-अलग प्रस्तुत किया है– बौद्ध धर्मावलंबियों द्वारा बालक को राहुल एवं यशोधरा को माता माना गया है। एक अन्य मत के अनुसार वृक्ष के नीचे माया देवी अपने पुत्र गौतम को लिए खड़ी हुई है। इसी प्रकार जैन मतावलंबियों द्वारा इसे यक्षी अंबिका माना गया है, जो आम्रवृक्ष के नीचे बालक को गोद में लिए खड़ी हुई है।

अभिलिखित चतुर्भुजी विष्णु प्रतिमा – मल्हार संग्रहालय में चतुर्भुजी विष्णु की अभिलिखित पाषाण निर्मित प्रतिमा लगभग 160 सेंटीमीटर में

* शोधार्थी, डॉ. सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय, करगीरोड, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.) भारत
** सह प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (इतिहास) डॉ. सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय, करगीरोड, कोटा, बिलासपुर (छ.ग) भारत

संग्रहित है। इसे चारों दिशा से उकेर कर बनाया गया है। इस प्रतिमा के अभिज्ञान के विषय में विद्वानों का मत अलग-अलग है। प्रोफेसर कृष्णदत्त बाजपेयी ने उक्त प्रतिमा को चतुर्भुजी माना है। इसके दण्ड भाग में मौर्यकालीन ब्राह्मी लिपि में लेख उत्कीर्ण है। इस प्रतिमा लेख से पता चलता है कि इस प्रतिमा की स्थापना पर्णदत्त की भार्या शरद्धाजी ने करवाया था। भारतवर्ष में अब तक प्राप्त अभिलिखित विष्णु प्रतिमाओं में यह प्रतिमा सबसे प्राचीन है। इस प्रतिमा का निर्माण काल ईसा पूर्व 200 माना गया है।[5] पूर्व समय में प्रतिमा को चारों ओर से उकेर बनाने का प्रथा थी। यक्षों की भी अन्य कई इसी प्रकार की अन्यत्र प्राप्त हुई है। प्रतिमा के चारों हाथों में क्रमश: चक्र,शंख,गदा प्रमुख है।

शैव प्रतिमाएं – भारत वर्ष के प्रचीनतम कला में शिव जी का शिल्पांकन अत्यंत प्राचीन है। मोहन जोदड़ो की एक मुहर पर विविध पशुओं से युक्त एक योग पुरुष की प्रतिमा प्राप्त हुआ है जो अनुमानत: पशुपति वाक्य की सार्थकता को प्रदर्शित करता है। भारतीय प्राचीन सिक्कों पर शिव जी के प्रतीक चिन्ह का चित्रांकन मिलता है। मल्हार से प्राप्त शिव जी के प्रतिमाओं को चार भागों में वितरित किया गया है। प्रथम भाग में मंगलकारी शांत प्रतिमाएं, द्वितीय भाग में दक्षिणापथ की प्रतिमाएं, तृतीय भाग में नृत्यरत् प्रतिमाएं तथा चतुर्थ भाग में संहारक प्रतिमाएं या अमंगलकारी प्रतिमाएं है।

मंगलकारी शांत मुद्रा वाली प्रतिमा के अंतर्गत सरल, शांत एवं सौम्य अनुग्रह मूर्तियां आती है। मंगलकारी मूर्तियों के अंतर्गत नीलकंठ, महेश्वर, महादेव, वृषभ वाहन शिव, उमा- महेश्वर, कल्याण-सुंदर, अर्द्धनारीश्वर, हरिहर आदि मंगलकारी रुप है। रावणानुग्रह, विघ्नेश्वर अनुग्रह के संबंध में भी उल्लेख मिलता है। भारतीय कला शिव के प्रमुख स्वरुप में नटराज शिव को माना गया है। नृत्यरत नटराज काल-भैरव एवं अंधकासुर वध आदि संहार व अमंगलकारी शिव के रौद्र रुप मल्हार से प्राप्त हुआ है।[6]

नटराज की प्रतिमा – मल्हार स्थित स्थानीय संग्रहालय में शिव जी का एक रौद्र रूप वाली नटराज की प्रतिमा स्थित है। इस प्रतिमा के दाएं हाथ में त्रिशुल के साथ ही बाण, अक्षमाला, परशु इत्यादि को प्रदर्शित किया गया है। बाएं हाथ में खट्वांग, सनालपुष्प, कपाल एवं बीजपूरक, कपाल आदि धारण किए हुए हैं। इस प्रतिमा में नटराज जी के चार हाथों का प्रदर्शन किया गया है। दायां निचले हाथ को उपदेश देने के मुद्रा में बनाया गया है। प्रतिमा में शिव जी को आभूषण धारण किए हुए दिखाया गया है, इनके गले में पुष्प के माला का सुंदर अंकन किया गया है, जिसकी लंबाई गले से लेकर घुटनों तक है। इनके मस्तक पर अनेक रत्नों से युक्त मुण्डमाल है, जो जटाजूट से अलंकृत है। प्रतिमा में नटराज जी बायां पांव स्थिर मुद्रा में एवं दायां पांव थोड़ा उठा हुआ है व नृत्यरत् मुद्रा में है।

उमा-महेश्वर की प्रतिमा – मल्हार के संग्रहालय में स्थित इस प्रतिमा को हमगौरी प्रतिमा के नाम से भी जाना जाता है। इस प्रतिमा में अनेक भेद भी पाया जाता है। यह प्रतिमा चतुर्भुजी है व नंदी के ऊपर सवार है। माता उमा इस प्रतिमा में शिव जी के बाएं जंघा पर ललितासन की मुद्रा में आसीन है व शिव जी माता उमा को अपने बाएं हाथ से आलिंगन कर रहे हैं।

शिव जी के दाएं हाथ में त्रिशुल धारण किए हुए हैं एवं बाएं हाथ से माता उमा को आलिंगन किए हुए हैं। माता पार्वती गले में माणिक्य माला धारण किए हुए व इनके कमर में मणि मेखला स्थित है। माता अपने हाथों एवं पैरों में अनेक अलंकृत आभूषण धारण किए हुए हैं। माता का दाहिना हाथ शिव जी के दाएं कंधे पर है। माता का दायां पांव घुटने से मुड़ कर बाएं पांव पर रखा है व दाएं हाथ में दर्पण लिए हुए हैं। शिव जी की एक हाथ नीचे की ओर आकर लटक रहा है। माता का बायां पैर व शिव जी का दायां पैर घुटनों तक मुड़ा हुआ है। इन दोनो के पैरो के मध्य नंदी एवं नृत्यरत मुद्रा में भृंगी की प्रतिमा है। दोनों के पैरों के नीचे पाद पीठ पर कटारधारी पुरूष एवं सिंह की प्रतिमा है, इसी के साथ नीचे हाथ जोड़े भक्तगण दिखाई दे रहे हैं।

इसी शंति संग्रहालय में एक अन्य प्रतिमा है, जिसमें भी माता पार्वती के साथ ही शिव जी की प्रतिमा भी शोभायमान है। यह प्रतिमा भी चतुर्भुजी आकार में है। शिव जी के दाहिने हाथ में त्रिशुल व बाएं हाथ में नाग धारण किए हैं। इस प्रतिमा में भी माता पार्वती के हाथ दर्पण है। माता ने कानों में गोल कुण्डल, कण्ठहार, चार लड़ियों वाली हार, बाजूबंध, पैरों में पायल धारण किए हुए हैं। शिव जी की प्रतिमा में भी समान अलंकरण है, इन दोनो का मात्र केश विन्यास भिन्न-भिन्न आकृति की है।[7] माता के केश विन्यास में मुक्त गुम्फित तीन ललाटिक आभूषण सुंदरता के चित्रित किया गया है। पाद पीठिका के नीचे दोनों किनारों पर नंदी एवं सिंह की आकृतियां अंकित है। दोनों के प्रतिमाओं के पैरों के मध्य भृंगी की छोटी सी प्रतिमा है। नीचे मध्य में दो मानव व नारी की आकृतियां अंकित है।

वैष्णव प्रतिमाएं – मल्हार नगर से प्राप्त ईसा पूर्व द्वितीय सदी की अभिलिखित चतुर्भुजी विष्णु प्रतिमा विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इस प्रतिमा को भारत में सबसे प्राचीन अभिलिखित पूज्य प्रतिमा मानी गयी है। ईसा पूर्व छठवीं सदी से तेरहवीं सदी तक के मध्य के काल में अनेक राजवंशों यथा पाण्डु वंश एवं कल्चुरी वंश के राजाओं ने अनेक विष्णु मंदिरों व प्रतिमाओं का निर्माण कराया है। इसके साथ ही सूर्य, शिव आदि देवताओं का सम्मिलित रूप से प्रतिमाओं को मूर्त रूप प्रदान किया गया है। इसी कारण इस समय की प्रतिमाओं का नाम हरिहर, योगनारायण, त्रिविक्रम लक्ष्मीनारायण, सर्वतोभद्र एवं हरिहरहरिणागर्भ आदि की प्रतिमाएं मिलती है।

चतुर्भुजी विष्णु – भगवान विष्णु की यह प्रतिमा संग्रहालय में स्थानक मुद्रा में प्रदर्शित है। उनकी मुखाकृति में शांत, सरल एवं सहज भाव व्यक्त होता है। इस प्रतिमा में विष्णु जी मस्तक में मुकुट धारण किए हुए हैं, साथ ही कान में चक्राकार कुण्डल, चार लड़ियों वाली माला गले में वनमाला, कमरबंध, कंकण एवं पैर में नुपूर पहने हुए हैं। सिर के पीछे भाग में चक्राकार सुंदर प्रभामंडल है। इस प्रतिमा में विष्णु जी के चार हाथों का प्रदर्शन किया गया है। विष्णु जी के ऊपर के दोनों हाथों में क्रमश: गदा पद्म एवं नीचे के दोनों हाथों में चक्र व शंख धारण किए हुए हैं। इनके नीचे के हाथों में दायीं ओर वरण एवं बायीं ओर का हाथ खंडित है।

शेषशायी विष्णु – मल्हार स्थित संग्रहालय की सफाई के दौरान शेषशायी विष्णु जी की एक सुंदर प्रतिमा मिली है। यह प्रतिमा मुलायम पत्थर से बना है एवं हल्का लाल व पीला रंग से बना है। इस प्रतिमा में विष्णु जी पांच फणों से युक्त शेष शैया के ऊपर विराजित हैं। माता लक्ष्मी विष्णु जी के पांव दबा रहीं हैं।[8] इनके नाभि कमल के ठीक ऊपर ब्रह्म जी विराजमान हैं। विष्णु जी के एक हाथ में सनाल कमल एवं दूसरे हाथ में चक्र धारण किए हुए हैं।

इन प्रमुख मूर्तियों के अतिरिक्त संग्रहालय में सैकड़ों की संख्या में असंख्य मूर्तियां बिखरी हुई पड़ी हुई है। उपर्युक्त प्रतिमाओं के अलावा गरूड़ासीन विष्णु, लक्ष्मी नारायण, वेणुवादक गोपाल, नृसिंह, गरूड़, लक्ष्मी माता की प्रतिमाएं, माता पार्वती की प्रतिमाएं, दुर्गा प्रमिाएं, वैष्णवी प्रतिमाएं, सरस्वती माता की प्रतिमाएं, महिषासुर मर्दिनी, अष्टभुजी चामुण्डा काली, यक्षी प्रतिमाएं, गंगा-यमुना, अंधकासूर का वध, कल्याण सुंदर की प्रतिमा, सूर्य प्रतिमा, हरिहर हिरण्य गर्भ की प्रतिमा, सूर्य एवं शिव की सम्मिलित प्रतिमा, कुबेर की प्रतिमा,नवगृह, नाग-नागिन की प्रतिमा, हनुमान जी की प्रतिमा,

शाल भंजिका, गज की प्रतिमा, अश्व की प्रतिमा, हंस की प्रतिमा, बतख की प्रतिमा, बाली वध, भगवान शिव की दुर्लभ प्रतिमाएं संग्रहालय को शोभा को बढ़ा रहे हैं।

मल्हार से प्राप्त लेख एवं शिलालेख – दक्षिण कोसल की प्राचीन राजधानी का परिधान लिए यह ऐतिहासिक स्थल पुरातन सामग्रियों, अभिलेखों एवं मुद्राओं से भरा हुआ है। इस भू-भाग की पाषाण कला पग-पग मुखरित है, यहां की कला, संस्कृति एवं धार्मिक सहिष्णुता दूर-दूर तक फैली हुई है। इस स्थल की धार्मिक एवं पौराणिक गाथाओं से संबंधित अनेक पाषाण प्रतिमाएं सैलानियों का मन मोह लेती है। यहां के प्राचीन मंदिर, मठ, विहार एवं गढ़ आदि की शिलपकला हमारी प्राचीन संस्कृति की गौरवगाथा को सजीवता प्रदान कर रही है। यह प्राचीन नगरी अपने अतीत के धरोहर से परिपूर्ण लगभग 10 किलोमीटर की लंबाई में विस्तृत है। इस पवित्र नगरी मल्हार ने सातवाहन कालीन, कुषाण कालीन, शरभपुरीय कालीन एवं कल्चुरी कालीन राजाओं के शिलालेख, ताम्रपत्र लेख, सिक्के एवं मिट्टी से निर्मित पात्र इत्यादि के अवशेष अपने हृदय स्थल में समाएं हुए है।

मल्हार के निकटतम ग्राम जुनवानी के प्रतिष्ठित निवासी डॉ. अहमद खान को कुछ समय पूर्व ताम्रपत्र का पूरा सेट प्राप्त हुआ है। इसे दिनांक 18 जनवरी 1988 ई. को अध्ययन एवं प्रकाशन हेतु श्री रघुनंदन प्रसाद पाण्डेय जी डॉ. अहमद खान से प्राप्त किया गया। इसे श्री पाण्डेय जी ने बिलासपुर स्थित पुरातत्व विभाग के कार्यालय में संपर्क कर ताम्रपत्र के मूल विषय वस्तु की जानकारी प्राप्त हुई। इस ताम्रपत्र में तीन अलग-अलग पत्रों में उत्कीर्ण है एवं मुहर युक्त छल्ले से बंधा हुआ है। पत्रों का आकार लगभग 14.5 x 21 से. मी. है। प्रत्येक पत्र के बाएं भाग में मुद्रा का व्यास 9 से. मी. है। मुद्रा के ऊपरी भाग में त्रिशुल नंदी व कलश है। मध्य में दो पंक्तियों का लेख है व निचले हिस्से में पत्र सहित उत्फुल्ल कमल सुशोभित है।

ताम्रपत्र का कुल वजन लगभग दो किलो छः सौ ग्राम है। कुल 41 पंक्तियों का लेख छः बाजुओं पर उत्कीर्ण है, पांच पृष्ठों पर आठ-आठ पंक्तियां एवं प्रथम पत्र के पृष्ठ भाग पर एक पंक्ति का लेख उत्कीर्ण है। अक्षर गहरे व सफाई से खोदे गए हैं। लेख की लिपि ब्राम्ही का पेटिका शीर्ष रुप है तथा इसकी भाषा संस्कृत है। यह ताम्रपत्र सिरपुर के पाण्डु वंशीय प्रसिद्ध नरेश महाशिवगुप्त बालार्जुन द्वारा निर्मित है, इसके अतिरिक्त महाशिवगुप्त बालार्जुन के अन्य शिलालेख बारकुला, लोधिया एवं मल्हार आदि स्थलों से प्राप्त हुए हैं, जो नौ सेट में मिले हैं। महाशिवगुप्त बालार्जुन का शासनकाल दक्षिण कोसल अर्थात् प्राचीन छत्तीसगढ़ का स्वर्ण काल माना जाता है। महाशिवगुप्त बालार्जुन गुप्त नरेश हर्ष गुप्त एवं रानी वासटा के पुत्र हैं। छोटी अवस्था में ही धनुर्विद्या में महाशिवगुप्त बालार्जुन पारंगत हो गए थे। इन्होंने परम माहेश्वर की उपाधि धारण की थी। इनके शासन काल में दक्षिण कोसल में अनेक धर्म फलते-फुलते रहे। महाशिवगुप्त का राजत्वकाल पूर्ण रूप से धर्म सहिष्णु रहा। इन्होंने शैव धर्म अपनायी थी।

मलहार जहां पाषाण मुखरित है। इस स्थल के विषय में यह कहावत चरितार्थ होती है, कि यहां पाषाण प्रतिमाओं के साथ ही शिलालेख, शिलापट्ट लेख मूर्तियों में लेख विशेष रूप से दिखाई पड़ते हैं। इसी शृंखला में विगत वर्षों में पुरातत्व पंजीकरण अधिकारी को मल्हार प्रवास के दौरान एक शिलालेख प्राप्त हुआ है, जो 140 x 30 x 12 से. मी. आकार के बलुए पत्थर पर चार पंक्तियों में उत्कीर्ण है। इस शिलालेख की भाषा प्राकृत है। जिसमें नकुश के कनिष्ठ पुत्र इसीनाम एवं रथिक अत्यादि द्वारा उपाध्याय को दान में देने का उल्लेख मिलता है। यह शिलालेख संभवतः स्मृति लेख है। यह शिलालेख पुरातत्व विभाग बिलासपुर के कार्यालय में सुरक्षित है।

निजी संग्रहालय – मल्हार नगर में मंदिरों के अतिरिक्त 2 निजी संग्रहालय दार्शनिकों के हर समय खुला रहता है, जो कि निःशुल्क है। प्रथम निजी संग्रहालय स्व. रघुनंदन प्रसाद पाण्डेय के घर में स्थित है। इस निजी संग्रहालय में प्रवेश करने पर एक सामान्य घर जैसा ही दिखता है, इस संग्रहालय में लोहे से बनी ताम्रपत्र है, प्राचीन कालीन सिक्के हैं, शिलालेख, मूर्तियां एवं अन्य दुर्लभ वस्तुओं का संग्रह है। स्व. रघुनंदन प्रसाद पाण्डेय को राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त हुआ था। इनके पुत्र संजीव पाण्डेय जी हैं, जो कि पत्रकार एवं समाजसेवी हैं। इन्होंने अपने मकान में अनेक दुर्लभ वस्तुओं का संग्रहण किया है। तीन ताम्रपत्र इनके घर में आज भी सुरक्षित है। इसके अतिरिक्त छोटी व बड़ी मूर्तियों का संग्रह इनके मकान में है।द्वितीय निजी संग्रहालय स्व. गुलाब सिंह ठाकुर के मकान में स्थित है। इनका मकान स्कूल चौक के निकट ही है, जहां पर एक अलग से कमरा बना हुआ है, जिसके भीतर अत्यंत दुर्लभ प्राचीन धरोहरों की अमूल्य वस्तुओं का संग्रह है। कोई पर्यटक यदि मल्हार भ्रमण करने आता है और निजी संग्रहालय का दर्शन नहीं करता है, तो उसका भ्रमण अधूरा ही कहलायेगा।स्व. गुलाब सिंह ठाकुर मल्हार निवासी थे, जो बचपन से ही पुरातत्व में रूचि रखते थे, ये सुबह से शाम तक मल्हार नगरी के सभी दिशाओं का विचरण करते थे, यह इनके दिनचर्या में शामिल था। मल्हार से प्राप्त पुरातात्विक वस्तुओं को अपने घर में सहेज कर रखते थे।

निष्कर्ष – मल्हार नगरी की प्राचीन संस्कृति अत्यंत गौरवशाली रहा है। सौंदर्यता यहां की धरती के कण-कण में छुपा हुआ है। इस स्थल का अमूल्य धरोहर विशिष्टता लिए हुए है। यहां की प्राकृतिक बनावट नदियों, सरोवरों, शिलाखण्डों के साथ ही प्राचीन गढ़ मंदिरों एवं प्राचीन गढ़ किला से परिपूर्ण है। दक्षिण कोसल की प्राचीन नगरी पुरातन सामग्रियों, अभिलेखों, सिक्कों एवं मुद्राओं से भरा हुआ था। मल्हार स्थित संग्रहालय एवं शिलालेख एक अमूल्य धरोहर है। इसका स्पष्टीकरण यहां के उत्खनन से प्राप्त प्राचीन प्रतिमाओं से होती है, जो न मात्र इस क्षेत्र की प्राचीन कला का प्रत्यक्ष उदाहरण है। इस भू-भाग में समृद्ध शिलालेख व संग्रहालय हैं, जो वर्तमान में हमारी परम्पराओं के आदर्श प्रस्तुत करते हैं। किन्तु इस अमूल्य धरोहर की दशा अत्यंत दयनीय है, साथ ही यहां स्थित शिलालेख एवं संग्रहालय की दशा भी शोचनीय है। मल्हार स्थित भवन में कुछ प्रतिमाएं सहेज कर रखी गयी है, परन्तु सैकड़ो प्रतिमाएं संग्रहालय प्रांगण में खुले आसमान के नीचे जमीन पर रखे गए हैं। जलवायु के प्रहार से यह प्राचीन स्मारक विनष्ट हो रहे हैं। जिन प्रतिमाओं ने सैकड़ो वर्ष धरती के भीतर सुरक्षित रहकर गुजार लिया, परन्तु अब संग्रहालय विभाग के संरक्षण में नष्टप्राय हो रहे हैं।

पुरातात्विक नगरी मल्हार में पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं, यह स्थल हरीतिमा से आच्छादित एवं अमूल्य धरोहर संपन्न है, यह छत्तीसगढ़ का प्रमुख पर्यटन स्थल बन सकता है। इस स्थल के शिलालेख एवं संग्रहालय का पर्याप्त मात्रा में अभी तक प्रचार प्रसार नहीं हुआ है। इस स्थल में गाइड सेवा, सूचना पटलों व साइन बोर्डो इत्यादि की व्यवस्था नहीं है। यदि शासन द्वारा स्थानीय शिक्षित लोगों को साथ लेकर जिले में पर्यटन केन्द्रों के विकास के लिए प्रयत्न किया जाए तो निश्चित रूप से इस क्षेत्र के गौरवपूर्ण इतिहास से परिचित होगें साथ ही इस अंचल की छिपी विशिष्ट कलाओं से अवगत होगें।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. वर्मा, डॉ. भगवान सिंह, छत्तीसगढ़ का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक

इतिहास, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल पृष्ठ क्रमांक 22

2. शुक्ला, डॉ. शांता, छत्तीसगढ़ का सामाजिक, आर्थिक इतिहास, नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली 1988, पृष्ठ क्रमांक 5
3. मिराशी, विष्णु वासुदेव, कल्चुरी नरेश और उनका काल पृष्ठ क्रमांक 35-36
4. मिश्र, बलदेव प्रसाद, छत्तीसगढ़ का परिचय पृष्ठ क्रमांक 119-120
5. पाण्डेय, रघुनंदन प्रसाद, मल्हार दर्शन पृष्ठ क्रमांक 21,22
6. केशरवानी, कु. ऋतु, छत्तीसगढ़ की कला एवं संस्कृति पृष्ठ क्रमांक 2, 2004-05 शोध प्रबंध
7. शर्मा डॉ. टी. डी., छत्तीसगढ़ के पर्यटन स्थल पृष्ठ क्रमांक 44
8. गुप्त, मदनलाल, छत्तीसगढ़ दिग्दर्शन भाग- 2, भारतेन्दु हिन्दी साहित्य समिति बिलासपुर पृष्ठ क्रमांक 4

****